

M.A. 3RD SEMESTER (PAPER CODE-A080901T)

SHORT ANSWER (TOPIC - INTERNATIONAL ECONOMICS)

प्रश्न 1: एडम स्मिथ के निरपेक्ष लाभ (**Absolute Advantage**) के सिद्धान्त का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर:

एडम स्मिथ ने 1776 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक '*The Wealth of Nations*' में निरपेक्ष लाभ सिद्धान्त (Absolute Advantage Theory) का प्रतिपादन किया था।

- मुख्य अवधारणा: इस सिद्धान्त के अनुसार, यदि एक देश किसी वस्तु का उत्पादन दूसरे देश की तुलना में कम लागत (कम श्रम) में कर सकता है, तो उसे उस वस्तु के उत्पादन में निरपेक्ष लाभ (Absolute Advantage) प्राप्त होता है।
- विशिष्टीकरण (**Specialization**): एडम स्मिथ का तर्क था कि प्रत्येक देश को केवल उसी वस्तु के उत्पादन में विशिष्टीकरण करना चाहिए जिसमें उसकी लागत सबसे कम हो और दूसरी वस्तु का आयात उस देश से करना चाहिए जो उसे सस्ते में बना सकता है।
- मान्यताएं:
 1. केवल 2 देश और 2 वस्तुएं हैं (2×2 Model)।
 2. श्रम ही उत्पादन का एकमात्र साधन है और मूल्य श्रम लागत पर आधारित है।
 3. देशों के बीच मुक्त व्यापार (Free Trade) और बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition) पाई जाती है।
 4. परिवहन लागत को शून्य माना गया है।
- निष्कर्ष: जब देश अपनी निरपेक्ष श्रेष्ठता वाली वस्तुओं का उत्पादन करके आपस में व्यापार करते हैं, तो इससे दोनों देशों को व्यापार से लाभ होता है और कुल विश्व उत्पादन में वृद्धि होती है।

प्रश्न 2: एडम स्मिथ के निरपेक्ष लागत लाभ सिद्धान्त की मुख्य मान्यताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

एडम स्मिथ के निरपेक्ष लागत लाभ सिद्धान्त की मुख्य मान्यताएं निम्नलिखित हैं:

1. श्रम मूल्य सिद्धान्त (**Labor Theory of Value**): किसी वस्तु का मूल्य या उसकी लागत उसमें लगे श्रम के घंटों की मात्रा पर निर्भर करती है।
2. दो देश एवं दो वस्तुएं (2×2 Model): यह सिद्धान्त सरलता के लिए मानकर चलता है कि केवल दो ही देश (जैसे- देश A और देश B) हैं जो केवल दो ही वस्तुओं (जैसे- गेहूं और कपड़ा) का व्यापार करते हैं।
3. साधनों की गतिशीलता: श्रम उत्पादन का एकमात्र साधन है जो देश के भीतर पूर्णतः गतिशील है, लेकिन दो देशों के बीच पूर्णतः अगतिशील है।

4. पूर्ण प्रतियोगिता: वस्तु बाजार और साधन (श्रम) बाजार दोनों में पूर्ण प्रतियोगिता पाई जाती है।
5. पूर्ण रोजगार: व्यापार करने वाले दोनों देशों में अर्थव्यवस्था के सभी साधनों का पूर्ण रोजगार पाया जाता है।
6. परिवहन लागत का अभाव: दो देशों के बीच वस्तुओं के परिवहन में कोई लागत (Transport Cost) नहीं आती है।
7. स्थिर प्रतिफल नियम: उत्पादन में पैमाने के स्थिर प्रतिफल (Constant Returns to Scale) लागू होते हैं।

प्रश्न 3: हेक्सचर-ओहलिन (H-O) सिद्धान्त की मान्यताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: हेक्सचर-ओहलिन सिद्धान्त (जिसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आधुनिक सिद्धान्त भी कहा जाता है) की मुख्य मान्यताएं निम्न प्रकार हैं:

1. **\$2 \times 2 \times 2\$** मॉडल: व्यापार में दो देश, दो वस्तुएं और उत्पादन के दो साधन (श्रम और पूंजी) शामिल हैं।
2. साधन सम्पन्नता में भिन्नता (**Factor Endowment Difference**): दोनों देशों में उत्पादन के साधनों की प्रचुरता अलग-अलग होती है—एक देश पूंजी-समृद्ध और दूसरा श्रम-समृद्ध होता है।
3. गहनता में भिन्नता: एक वस्तु श्रम-प्रधान (Labor-intensive) और दूसरी वस्तु पूंजी-प्रधान (Capital-intensive) होती है।
4. पूर्ण प्रतियोगिता: वस्तु बाजार और साधन बाजार दोनों में पूर्ण प्रतियोगिता पाई जाती है।
5. साधनों की गतिशीलता: साधन देश के अंदर पूर्णतः गतिशील होते हैं लेकिन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अगतिशील होते हैं।
6. समान तकनीक: दोनों देशों में एक ही वस्तु के उत्पादन के लिए समान तकनीकी ज्ञान और उत्पादन फलन (Production Function) उपलब्ध होता है।
7. पैमाने के स्थिर प्रतिफल: उत्पादन प्रक्रिया में पैमाने के स्थिर प्रतिफल (Constant Returns to Scale) लागू होते हैं।

प्रश्न 4: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के परम्परावादी सिद्धान्त तथा हेक्सचर-ओहलिन सिद्धान्त की तुलना कीजिए।

उत्तर: परम्परावादी (क्लासिकल जैसे- रिकार्डो) सिद्धान्त और आधुनिक (हेक्सचर-ओहलिन) सिद्धान्त के बीच मुख्य तुलना निम्न बिंदुओं पर की जा सकती है:

- साधनों का आधार: क्लासिकल मॉडल केवल एक साधन 'श्रम' पर आधारित है (एक-साधनीय मॉडल), जबकि ओहलिन सिद्धान्त श्रम और पूंजी दोनों साधनों को शामिल करता है (द्वि-साधनीय मॉडल)।
- व्यापार का कारण: क्लासिकल मॉडल यह स्पष्ट करने में विफल रहता है कि दो देशों में तुलनात्मक लागतों में अंतर क्यों होता है। ओहलिन सिद्धान्त स्पष्ट करता है कि साधन प्रचुरता (Factor Endowment) में भिन्नता के कारण ही लागतों में अंतर आता है।
- संतुलन दृष्टिकोण: क्लासिकल सिद्धान्त आंशिक संतुलन (Partial Equilibrium) पर आधारित है, जबकि ओहलिन का सिद्धान्त एक सामान्य संतुलन (General Equilibrium) प्रणाली पर आधारित है।
- व्यावहारिकता: ओहलिन का सिद्धान्त क्लासिकल सिद्धान्त की तुलना में अधिक व्यावहारिक और वैज्ञानिक माना जाता है।

प्रश्न 5: हेक्सचर-ओहलिन के सिद्धान्त का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर: हेक्सचर-ओहलिन सिद्धान्त ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को समझने में बड़ा योगदान दिया, लेकिन इसकी कई आलोचनाएं भी की गई हैं:

1. अवास्तविक मान्यताएं: यह सिद्धान्त पूर्ण रोजगार, पूर्ण प्रतियोगिता, स्थिर प्रतिफल और परिवहन लागत के अभाव जैसी काल्पनिक मान्यताओं पर आधारित है जो वास्तविक दुनिया में नहीं मिलती हैं।
2. मांग पक्ष की उपेक्षा: इस सिद्धान्त ने केवल साधन की पूर्ति (Supply Side) पर अधिक बल दिया और उपभोक्ताओं की मांग, रुचि तथा पसंद के प्रभाव को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया।
3. लियोनतीफ विरोधाभास: वासिली लियोनतीफ के व्यावहारिक अध्ययन ने यह सिद्ध करके इस सिद्धान्त पर सवाल उठाया कि पूंजी-समृद्ध देश (अमेरिका) वास्तव में श्रम-प्रधान वस्तुओं का निर्यात कर रहा था।
4. तकनीक में अंतर की उपेक्षा: वास्तव में सभी देशों के पास उत्पादन की समान तकनीक उपलब्ध नहीं होती है।

प्रश्न 6: साधन-मूल्य समानीकरण सिद्धान्त (Factor-Price Equalization) क्या है?

उत्तर: पॉल सैमुअलसन द्वारा विकसित साधन-मूल्य समानीकरण सिद्धान्त हेक्सचर-ओहलिन मॉडल का ही एक महत्वपूर्ण पूरक रूप है।

- अवधारणा: इस सिद्धान्त के अनुसार, जब दो देशों के बीच मुक्त अंतर्राष्ट्रीय व्यापार होता है, तो वस्तुओं के स्वतंत्र व्यापार के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से उत्पादन के साधनों (श्रम और पूंजी) के मूल्यों में भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समानता आने की प्रवृत्ति पाई जाती है।
- प्रक्रिया:
 - व्यापार से पहले श्रम-समृद्ध देश में मजदूरी कम और पूंजी-समृद्ध देश में ब्याज कम होता है।
 - व्यापार शुरू होने के बाद, श्रम-समृद्ध देश अपनी श्रम-प्रधान वस्तु का निर्यात बढ़ाता है जिससे वहां श्रम की मांग और मजदूरी बढ़ती है।
 - दूसरी ओर, पूंजी-समृद्ध देश में पूंजी की मांग और ब्याज बढ़ता है।
- परिणाम: अंततः दोनों देशों में श्रमिकों की वास्तविक मजदूरी और पूंजीपतियों की ब्याज दरें एक-दूसरे के बराबर (निरपेक्ष और सापेक्षिक दोनों रूप में) हो जाती हैं।

प्रश्न 7: लियोनतीफ का विरोधाभास (Leontief Paradox) क्या है?

उत्तर: नोबेल पुरस्कार विजेता वासिली लियोनतीफ ने 1953 में अमेरिका के 1947 के इनपुट-आउटपुट (Input-Output) आंकड़ों का उपयोग करके हेक्सचर-ओहलिन (H-O) सिद्धान्त की व्यावहारिक सत्यता की जांच की।

- ओहलिन सिद्धान्त का अनुमान: चूंकि संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) दुनिया का सबसे बड़ा पूंजी-समृद्ध (Capital-abundant) देश था, इसलिए ओहलिन सिद्धान्त के अनुसार अमेरिका को पूंजी-प्रधान वस्तुओं का निर्यात और श्रम-प्रधान वस्तुओं का आयात करना चाहिए था।
- लियोनतीफ का वास्तविक निष्कर्ष: लियोनतीफ ने अपने डेटा विश्लेषण में पाया कि अमेरिका वास्तव में श्रम-प्रधान (**Labor-intensive**) वस्तुओं का निर्यात कर रहा था और पूंजी-प्रधान (**Capital-intensive**) वस्तुओं का आयात कर रहा था।

- विरोधाभास: ओहलिन के सिद्धान्त के ठीक विपरीत आए इस व्यावहारिक निष्कर्ष को ही अर्थशास्त्र में लियोनतीफ का विरोधाभास कहा जाता है।

प्रश्न 8: लियोनतीफ विरोधाभास के क्या कारण बताए गए?

उत्तर: लियोनतीफ के इस आश्चर्यजनक निष्कर्ष की व्याख्या करने के लिए अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित प्रमुख कारण प्रस्तुत किए:

1. मानव पूंजी व दक्षता (**Human Capital**): अमेरिकी श्रमिक साधारण श्रमिक नहीं थे, बल्कि अत्यधिक शिक्षित, कुशल और प्रशिक्षित थे। 1 अमेरिकी श्रमिक की कार्यक्षमता विदेशी श्रमिकों की तुलना में लगभग तीन गुनी थी, जिससे अमेरिका वास्तव में श्रम में भी समृद्ध था।
2. संरक्षण नीतियां व प्रशुल्क (**Tariff Structure**): अमेरिकी सरकार ने अपने घरेलू असंगठित श्रम-प्रधान उद्योगों को बचाने के लिए उन पर भारी प्रशुल्क (Tariff) लगाए थे, जिससे उनके आयात रुके हुए थे।
3. उपभोक्ता मांग की तीव्रता: अमेरिका में उच्च जीवन स्तर के कारण पूंजी-प्रधान वस्तुओं की घरेलू मांग इतनी अधिक थी कि उनके लिए निर्यात योग्य अधिशेष (Export Surplus) कम बचा।
4. प्राकृतिक संसाधन: कई पूंजी-प्रधान उद्योग प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर थे जो अमेरिका में दुर्लभ थे।

प्रश्न 9: "दो देशों के मध्य व्यापार का कारण तुलनात्मक लाभ है।" ओहलिन के इस कथन की विवेचना कीजिए।

उत्तर: प्रोफेसर बर्टिल ओहलिन के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार अंतर-क्षेत्रीय (Inter-regional) व्यापार का ही एक विशेष रूप है। उन्होंने स्पष्ट किया:

1. कीमतों में अंतर: दो देशों के बीच व्यापार का प्रत्यक्ष कारण यह है कि दोनों देशों में एक ही वस्तु की कीमतों में अंतर (Price Differences) पाया जाता है।
2. साधन कीमतों में अंतर: वस्तु-कीमतों में भिन्नता इसलिए होती है क्योंकि दोनों देशों में उत्पादन के साधनों की कीमतों (Factor Prices - मजदूरी और ब्याज) में अंतर होता है।
3. साधन प्रचुरता (**Factor Endowment**): साधन कीमतों में अंतर का मूल कारण यह है कि अलग-अलग देशों में साधनों की सापेक्षिक उपलब्धता भिन्न-भिन्न होती है।
- निष्कर्ष: जिस देश में जो साधन प्रचुर मात्रा में होता है, वह सस्ता होता है। उस सस्ते साधन का उपयोग करके बनी वस्तु की उत्पादन लागत कम आती है, जिससे उस देश को उस वस्तु में तुलनात्मक लाभ प्राप्त होता है और यही व्यापार का मुख्य आधार बनता है।

प्रश्न 10: साधन कीमत समानीकरण सिद्धान्त की मान्यताएं क्या हैं?

उत्तर: साधन कीमत समानीकरण सिद्धान्त (Factor-Price Equalization Theorem) निम्नलिखित मान्यताओं पर टिका हुआ है:

1. 2×2 संरचना: दो देश, दो वस्तुएं और उत्पादन के दो साधन (श्रम और पूंजी)।
2. पूर्ण प्रतियोगिता: दोनों देशों के वस्तु और साधन बाजारों में पूर्ण प्रतियोगिता विद्यमान है।
3. शून्य परिवहन लागत: व्यापार में कोई परिवहन खर्च या सीमा शुल्क (Tariff) जैसी बाधाएं नहीं हैं।
4. साधनों की अंतर्राष्ट्रीय अगतिशीलता: साधन देश के भीतर पूरी तरह गतिशील हैं, लेकिन देशों के मध्य

उनका आवागमन संभव नहीं है।

5. समान उत्पादन तकनीक: दोनों देशों के पास एक जैसी तकनीकी जानकारी उपलब्ध है।
6. सीमांत उत्पादकता ह्रास नियम: दोनों वस्तुओं के उत्पादन में घटते सीमांत प्रतिफल (Diminishing Marginal Returns) का नियम लागू होता है।

प्रश्न 11: लिंडर परिकल्पना (Linder Hypothesis) को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

स्टाफन बी. लिंडर (1961) ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक वैकल्पिक सिद्धान्त दिया जिसे ओवरलैपिंग मांग सिद्धान्त (**Overlapping Demand Theory**) भी कहते हैं।

- मुख्य अंतर: लिंडर का मानना था कि हेक्सचर-ओहलिन सिद्धान्त प्राथमिक/कृषि वस्तुओं के व्यापार पर तो लागू होता है, लेकिन निर्मित/औद्योगिक वस्तुओं (**Manufactured Goods**) के व्यापार पर लागू नहीं होता।
- तर्क: निर्मित वस्तुओं के व्यापार का मुख्य निर्धारक साधन प्रचुरता न होकर घरेलू मांग की संरचना (**Structure of Domestic Demand**) होती है।
- सिद्धान्त: किसी देश में किसी निर्मित वस्तु का उत्पादन तब शुरू होता है जब उसके लिए घरेलू बाजार में मांग होती है। फिर वह देश वैसी ही प्रति व्यक्ति आय और समान उपभोक्ता प्राथमिकताओं वाले अन्य देशों को उस वस्तु का निर्यात करता है।
- निष्कर्ष: जिन देशों का आय स्तर और जीवन स्तर समान होता है, उनके बीच निर्मित वस्तुओं का द्विपक्षीय व्यापार सबसे अधिक होता है।

प्रश्न 12: स्टॉपलर-सैमुएलसन प्रमेय के निहितार्थ पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर: स्टॉपलर-सैमुएलसन प्रमेय (Stolper-Samuelson Theorem - 1941) यह दर्शाती है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और प्रशुल्क (Tariff) नीतियां किसी देश के भीतर आय वितरण (Income Distribution) को कैसे प्रभावित करती हैं।

- मुख्य निहितार्थ:
 1. दुर्लभ साधन को लाभ: यदि कोई देश किसी आयातित वस्तु पर प्रशुल्क (Tariff) लगाता है, तो उस आयातित वस्तु के उत्पादन में गहनता से प्रयुक्त होने वाले दुर्लभ साधन (**Scarce Factor**) की वास्तविक आय (Real Income) में वृद्धि होती है।
 2. प्रचुर साधन को हानि: इसके विपरीत, देश के प्रचुर साधन (**Abundant Factor**) की वास्तविक आय में गिरावट आती है।
 3. संरक्षणवाद का आधार: यह प्रमेय स्पष्ट करती है कि क्यों किसी देश के कुछ विशिष्ट समूह (जैसे- पूंजीपति या श्रमिक) व्यापार संरक्षण की मांग करते हैं, क्योंकि प्रशुल्क से उनकी व्यक्तिगत वास्तविक आय बढ़ती है।

प्रश्न 13: विनिमय दर (Exchange Rate) की परिभाषा दीजिए।

उत्तर: विनिमय दर (Exchange Rate) अंतर्राष्ट्रीय वित्त की एक मौलिक अवधारणा है।

- परिभाषा: विनिमय दर वह दर या मूल्य है जिस पर एक देश की राष्ट्रीय मुद्रा को दूसरे देश की मुद्रा में परिवर्तित या बदला जाता है। सरल शब्दों में, यह विदेशी मुद्रा की एक इकाई की देशी मुद्रा में कीमत है।
- उदाहरण: यदि विदेशी मुद्रा बाजार में $\$1 \text{ USD} = 83 \text{ INR}$ है, तो इसका तात्पर्य है कि 1 अमेरिकी डॉलर खरीदने के लिए भारतीय नागरिक को 83 भारतीय रुपये चुकाने होंगे।
- प्रकार: विनिमय दर मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं—स्थिर विनिमय दर (Fixed Exchange Rate) और परिवर्तनशील या लोचदार विनिमय दर (Floating Exchange Rate)।

प्रश्न 14: विनिमय दर को प्रभावित करने वाले प्रमुख घटक कौन-कौन से हैं?

उत्तर: किसी देश की विनिमय दर का निर्धारण और उसमें उतार-चढ़ाव निम्नलिखित प्रमुख घटकों से प्रभावित होता है:

1. मुद्रा की मांग और पूर्ति: विदेशी मुद्रा की मांग (आयात के लिए) और पूर्ति (निर्यात के लिए) विनिमय दर का प्राथमिक निर्धारण करती हैं।
2. सापेक्षिक मुद्रास्फीति दर (**Inflation Rates**): जिस देश में मुद्रास्फीति (महंगाई) अधिक होती है, उसकी मुद्रा का मूल्य घटता है और विनिमय दर कमजोर होती है।
3. ब्याज दरें (**Interest Rates**): उच्च ब्याज दरें विदेशी पूंजी (FDI/FPI) को आकर्षित करती हैं, जिससे देश की मुद्रा की मांग बढ़ती है और वह मजबूत होती है।
4. चालू खाते का घाटा (**Current Account Deficit**): यदि किसी देश के आयात उसके निर्यातों से अधिक हैं, तो उसे अधिक विदेशी मुद्रा देनी पड़ती है, जिससे उसकी विनिमय दर गिरती है।
5. राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिरता: राजनीतिक रूप से स्थिर देशों में विदेशी निवेशक अधिक पैसा लगाते हैं, जिससे वहां की मुद्रा मजबूत बनी रहती है।

प्रश्न 15: प्रशुल्क (Tariff / तटकर) का अर्थ एवं परिभाषा लिखिए।

उत्तर: प्रशुल्क या तटकर (Tariff) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर लगाया जाने वाला एक प्रमुख व्यापारिक प्रतिबंध है।

- अर्थ: प्रशुल्क वह कर या शुल्क (Tax or Duty) है जो किसी देश की सरकार द्वारा अपनी सीमा पार करने वाले माल पर—विशेष रूप से आयातित वस्तुओं (Imported Goods) पर—लगाया जाता है।
- परिभाषा: अर्थशास्त्रियों के अनुसार, "प्रशुल्क एक ऐसी कर-सूची है जो विदेशों से आने वाले सामान पर सीमा शुल्क के रूप में वसूल की जाती है ताकि स्वदेशी उद्योगों को संरक्षण दिया जा सके और सरकारी राजस्व में वृद्धि की जा सके।"
- उद्देश्य: प्रशुल्क के दो मुख्य उद्देश्य होते हैं—आयात को महंगा करके स्वदेशी उद्योगों को सुरक्षा (Protection) देना, और सरकार के लिए वित्तीय राजस्व (Revenue) जुटाना।

प्रश्न 16: प्रशुल्क के मापन की प्रमुख विधियां बताइए।

उत्तर: प्रशुल्क (Tariff) लगाने या उसके मापन की तीन प्रमुख विधियां प्रचलित हैं:

1. मूल्यानुसार प्रशुल्क (**Ad-Valorem Tariff**): यह प्रशुल्क आयातित वस्तु के कुल monetary value (मूल्य) के एक निश्चित प्रतिशत के रूप में लगाया जाता है। उदाहरण के लिए, 100 डॉलर की घड़ी पर 10% का मूल्यानुसार प्रशुल्क लगाने पर 10 डॉलर का टैक्स लगेगा।
2. विशिष्ट प्रशुल्क (**Specific Tariff**): यह टैक्स वस्तु के मूल्य पर निर्भर न होकर उसकी भौतिक इकाइयों

(जैसे- प्रति टन, प्रति मीटर, या प्रति कार) पर एक निश्चित धनराशि के रूप में लगाया जाता है। जैसे- प्रति कार पर ₹50,000 का प्रशुल्क।

3. संयुक्त या मिश्रित प्रशुल्क (**Compound Tariff**): जब किसी वस्तु पर मूल्यानुसार और विशिष्ट दोनों प्रकार के प्रशुल्क एक साथ मिलाकर लगाए जाते हैं, तो उसे संयुक्त प्रशुल्क कहते हैं।

प्रश्न 17: प्रशुल्क युद्ध (Tariff War) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: प्रशुल्क युद्ध (Tariff War) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में एक नकारात्मक और विनाशकारी स्थिति को दर्शाता है।

- प्रक्रिया:
 1. जब कोई देश A अपने घरेलू उद्योगों को बचाने या व्यापार घाटे को कम करने के लिए देश B से आने वाले सामान पर भारी प्रशुल्क (Tariff) लगा देता है।
 2. प्रतिक्रियास्वरूप, देश B भी पहले देश A की वस्तुओं पर प्रतिशोधात्मक प्रशुल्क (Retaliatory Tariff) थोप देता है।
 3. यह सिलसिला दोनों ओर से लगातार प्रशुल्क बढ़ाने के रूप में आगे बढ़ता रहता है।
- प्रभाव: प्रशुल्क युद्ध के कारण दोनों देशों के बीच वस्तुओं के दाम अत्यधिक बढ़ जाते हैं, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की मात्रा घट जाती है, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) बाधित होती है और अंततः दोनों ही देशों के उपभोक्ताओं और अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचता है।

प्रश्न 18: अनुकूलतम प्रशुल्क (Optimum Tariff) क्या है?

उत्तर: अनुकूलतम प्रशुल्क (Optimum Tariff) की अवधारणा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभों को अधिकतम करने से जुड़ी है।

- परिभाषा: अनुकूलतम प्रशुल्क वह विशिष्ट प्रशुल्क दर (Tariff Rate) है जो एक बड़ा देश अपने आयातों पर इस प्रकार लागू करता है कि जिससे व्यापार की शर्तों (Terms of Trade) में होने वाला सुधार, व्यापार की मात्रा में होने वाली कमी के नुकसान से अधिक हो।
- मुख्य उद्देश्य: यह प्रशुल्क दर उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहां देश का शुद्ध राष्ट्रीय कल्याण (**Net National Welfare**) अधिकतम स्तर पर पहुंच जाता है।
- शर्त: यह नीति केवल एक बड़ा देश (Large Country) ही सफलतापूर्वक लागू कर सकता है जो विश्व बाजार में कीमतों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

प्रश्न 19: प्रभावी संरक्षण (Effective Protection) पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर: प्रभावी संरक्षण की दर (Effective Rate of Protection - ERP) यह मापने का एक आधुनिक तरीका है कि किसी देश की प्रशुल्क संरचना किसी उद्योग को वास्तव में कितना संरक्षण प्रदान कर रही है।

- अवधारणा: पारंपरिक प्रशुल्क केवल अंतिम निर्मित वस्तु की कीमत पर ध्यान देता है (जिसे नाममात्र प्रशुल्क/Nominal Tariff कहते हैं)। लेकिन प्रभावी संरक्षण अंतिम वस्तु के प्रशुल्क के साथ-साथ उस वस्तु को बनाने में प्रयुक्त कच्चे माल व मध्यवर्ती आगतों (**Inputs**) पर लगे प्रशुल्क को भी ध्यान में रखता है।
- महत्व: ERP यह मापता है कि प्रशुल्क नीति के कारण किसी उद्योग द्वारा किए जाने वाले मूल्य वर्धन (**Value Addition**) में कितने प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यदि कच्चे माल पर प्रशुल्क कम और अंतिम वस्तु पर अधिक है, तो प्रभावी संरक्षण दर बहुत उच्च होगी।

प्रश्न 20: आयात प्रतिस्थापन (Import Substitution) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:

आयात प्रतिस्थापन (Import Substitution Industrialization - ISI) विकासशील देशों द्वारा अपनाई जाने वाली एक प्रमुख आर्थिक एवं औद्योगिक रणनीति है।

- अर्थ: इसका सीधा अर्थ है उन वस्तुओं का उत्पादन अपने ही देश के भीतर शुरू करना जिन्हें देश पहले विदेशों से आयात (Import) करता था।
- रणनीति: इस नीति के तहत सरकार देशी उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए विदेशी सामानों के आयात पर भारी प्रशुल्क और कोटा (Restrictions) लगाती है, तथा स्वदेशी कंपनियों को सब्सिडी, सस्ती जमीन और करों में छूट देती है।
- मुख्य उद्देश्य:
 1. विदेशों पर आर्थिक निर्भरता कम करना।
 2. देश के कीमती विदेशी मुद्रा भंडार (Foreign Exchange Reserves) की बचत करना।
 3. देश में ही रोजगार और औद्योगिक विकास को गति देना।

प्रश्न 21: आयात प्रतिस्थापन से होने वाले प्रमुख लाभ बताइए।

उत्तर: आयात प्रतिस्थापन नीति के प्रमुख आर्थिक लाभ निम्न प्रकार हैं:

1. विदेशी मुद्रा की बचत: विदेशों से माल न खरीदने के कारण देश का विदेशी मुद्रा कोष सुरक्षित रहता है जिसका उपयोग अन्य महत्वपूर्ण तकनीकों के आयात में किया जा सकता है।
2. घरेलू उद्योगों का सशक्तिकरण: देशी कंपनियों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से सुरक्षा मिलती है, जिससे नए उद्योग पनपते हैं और देश का औद्योगिक आधार मजबूत होता है।
3. रोजगार सृजन: देश के भीतर नई फैक्ट्रियां और कारखाने खुलने से स्थानीय युवाओं के लिए बड़े पैमाने पर नए रोजगार पैदा होते हैं।
4. आत्मनिर्भरता: संकट या युद्ध के समय देश विदेशी आपूर्ति में बाधा आने पर भी प्रभावित नहीं होता और आत्मनिर्भर बना रहता है।

प्रश्न 22: राशिपातन (Dumping) के स्वभाव की विवेचना कीजिए।

उत्तर: राशिपातन (Dumping) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में मूल्य विभेद (Price Discrimination) का एक विशिष्ट और आक्रामक रूप है।

- स्वभाव एवं परिभाषा: जब कोई निर्यातक देश या विदेशी कंपनी अपनी किसी वस्तु को अपने घरेलू बाजार की कीमत की तुलना में अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत ही सस्ती कीमत पर (यहां तक कि उत्पादन लागत से भी कम पर) बेचती है, तो इस प्रक्रिया को राशिपातन (Dumping) कहा जाता है।
- उद्देश्य:
 1. दूसरे देश के स्थानीय उद्योगों को आर्थिक नुकसान पहुंचाकर उन्हें बाजार से बाहर करना।
 2. विदेशी बाजार में अपना पूर्ण एकाधिकार (Monopoly) स्थापित करना।
 3. अपने देश में बचे हुए अत्यधिक उत्पादन (Surplus Production) को बाहर खपाना।

- प्रकार: यह अस्थायी (Sporadic), अल्पकालीन (Intermittent), या दीर्घकालीन (Persistent) स्वभाव का हो सकता है।

प्रश्न 23: कल्याणकारी अर्थशास्त्र (Welfare Economics) की प्रमुख आलोचनाएं क्या हैं?

उत्तर: कल्याणकारी अर्थशास्त्र, जो समाज के आर्थिक कल्याण को मापने और बढ़ाने का प्रयास करता है, की मुख्य आलोचनाएं निम्न हैं:

1. उपयोगिता की व्यक्तिगत तुलना असंभव: दो अलग-अलग व्यक्तियों की मानसिक संतुष्टि या उपयोगिता (Utility) की आपस में सटीक तुलना करना वैज्ञानिक रूप से संभव नहीं है।
2. एरो का असंभवता प्रमेय (**Arrow's Impossibility Theorem**): अर्थशास्त्री केनेथ एरो ने सिद्ध किया कि लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के माध्यम से व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को मिलाकर एक सर्वमान्य सामाजिक कल्याण फलन (Social Welfare Function) बनाना असंभव है।
3. मूल्य निर्णयों (**Value Judgments**) पर अत्यधिक निर्भरता: कल्याणकारी अर्थशास्त्र 'क्या है' (Objective) के बजाय 'क्या होना चाहिए' (Ethical/Normative) पर केंद्रित है, जिससे इसमें वस्तुनिष्ठता की कमी हो जाती है।

प्रश्न 24: भुगतान-संतुलन (Balance of Payments) की प्रमुख मर्दे कौन-कौन सी हैं?

उत्तर: किसी देश का भुगतान संतुलन (BoP) एक वर्ष की अवधि में विश्व के बाकी देशों के साथ उसके सभी आर्थिक लेन-देन का एक सुव्यवस्थित विवरण होता है। इसके दो मुख्य खाते और उनकी मर्दे निम्न हैं:

1. चालू खाता (**Current Account**):
 - दृश्य मर्दे (**Visible Items**): भौतिक वस्तुओं का आयात एवं निर्यात (जैसे- कार, तेल, अनाज)।
 - अदृश्य मर्दे (**Invisible Items**): सेवाओं का लेन-देन (जैसे- बैंकिंग, सॉफ्टवेयर, पर्यटन)।
 - एकपक्षीय अंतरण (**Unilateral Transfers**): विदेशों से प्राप्त उपहार, प्रेषित धन (Remittances) और अनुदान।
2. पूंजी खाता (**Capital Account**):
 - विदेशी निवेश: एफडीआई (FDI) और पोर्टफोलियो निवेश (FPI)।
 - ऋण एवं उधार: विदेशी सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं (IMF/World Bank) से लिए गए वाणिज्यिक ऋण।
 - बैंकिंग पूंजी: विदेशी मुद्रा भंडार में परिवर्तन।

प्रश्न 25: भुगतान संतुलन तथा व्यापार संतुलन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: व्यापार संतुलन और भुगतान संतुलन के बीच मुख्य अंतर निम्नलिखित हैं:

- क्षेत्र/दायरा: व्यापार संतुलन (Balance of Trade - BoT) एक संकीर्ण अवधारणा है, जबकि भुगतान संतुलन (Balance of Payments - BoP) एक बहुत ही व्यापक अवधारणा है।
- शामिल मर्दे: व्यापार संतुलन में केवल दृश्य वस्तुओं (**Visible Goods**) के आयात और निर्यात का अंतर शामिल होता है। इसके विपरीत, भुगतान संतुलन में दृश्य वस्तुओं के अलावा अदृश्य सेवाओं, अंतरण

- भुगतानों और पूंजीगत लेन-देन को भी शामिल किया जाता है।
- संतुलन की स्थिति: व्यापार संतुलन का खाता घाटे या आधिक्य में हो सकता है। लेकिन लेखांकन (Accounting) की दोहरी प्रविष्टि प्रणाली के दृष्टिकोण से भुगतान संतुलन का खाता सदैव संतुलित (\$BoP = 0\$) रहता है।

प्रश्न 26: अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक ब्लॉक (International Trading Blocks) से क्या आशय है?

उत्तर: अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक ब्लॉक विभिन्न राष्ट्रों द्वारा आपस में मिलकर बनाया गया एक अंतःसरकारी आर्थिक समूह होता है।

- उद्देश्य: इसका मुख्य उद्देश्य समूह के सदस्य देशों के बीच आपस में होने वाले व्यापार पर लगे सभी प्रशुल्क (Tariffs) और गैर-प्रशुल्क प्रतिबंधों (Non-tariff barriers) को कम करना या पूरी तरह समाप्त करना होता है।
- कार्यप्रणाली: इसके माध्यम से सदस्य देश आपस में मुक्त व्यापार को बढ़ावा देते हैं और एक-दूसरे को आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं।
- प्रमुख उदाहरण: यूरोपीय संघ (EU), उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता (NAFTA), आसियान (ASEAN), दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC), और ब्रिक्स (BRICS)।

प्रश्न 27: सीमा संघ के प्रावैगिक प्रभाव (Dynamic Effects of Customs Union) क्या हैं?

उत्तर: सीमा संघ (Customs Union) बनने से सदस्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर दीर्घकालीन प्रावैगिक (Dynamic) प्रभाव पड़ते हैं:

1. पैमाने की बचतें (**Economies of Scale**): बाजार का आकार बड़ा हो जाने के कारण उत्पादकों के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन करना संभव हो जाता है, जिससे प्रति इकाई उत्पादन लागत घटती है।
2. प्रतिस्पर्धा में वृद्धि: व्यापारिक बाधाएं हटने से सदस्य देशों की फर्मों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बढ़ती है, जिससे अकुशल फर्म अपनी दक्षता में सुधार करती हैं।
3. निवेश में प्रोत्साहन: बड़ा बाजार देखकर देशी और विदेशी निवेशक (FDI) नए उद्योगों में भारी निवेश करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।
4. तकनीकी प्रगति: ज्ञान और आधुनिक तकनीकों का तेजी से हस्तांतरण होता है।

प्रश्न 28: दक्षेश (SAARC) के सदस्य देशों के नाम बताइए।

उत्तर: दक्षेश (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन / SAARC - South Asian Association for Regional Cooperation) की स्थापना 8 दिसंबर 1985 को ढाका में हुई थी। इसके वर्तमान में कुल 8 सदस्य देश हैं:

1. भारत (India)
2. पाकिस्तान (Pakistan)
3. बांग्लादेश (Bangladesh)
4. श्रीलंका (Sri Lanka)

5. नेपाल (Nepal)
6. भूटान (Bhutan)
7. मालदीव (Maldives)
8. अफगानिस्तान (Afghanistan - यह अप्रैल 2007 में 14वें सार्क शिखर सम्मेलन में आठवां सदस्य बना)।

प्रश्न 29: आसियान (ASEAN) क्षेत्रों की प्रगति पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर: आसियान (Association of Southeast Asian Nations) दक्षिण-पूर्वी एशिया के 10 राष्ट्रों का एक अत्यंत सफल और गतिशील आर्थिक व क्षेत्रीय संगठन है।

- आर्थिक प्रगति: आसियान ने **AFTA (ASEAN Free Trade Area)** की स्थापना करके अपने सदस्य देशों के बीच 99% से अधिक वस्तुओं पर प्रशुल्क दरों को घटकर 0 से 5% के स्तर पर ला दिया है।
- एकल बाजार: इसने 'आसियान आर्थिक समुदाय' (AEC) का गठन करके वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और कुशल श्रम की मुक्त आवाजाही सुनिश्चित की है।
- वैश्विक केंद्र: आज यह क्षेत्र दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) प्राप्त करने का एक प्रमुख वैश्विक केंद्र बन चुका है।

प्रश्न 30: नाफ्टा (NAFTA) पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर: नाफ्टा (North American Free Trade Agreement - NAFTA) उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के तीन प्रमुख देशों के बीच एक ऐतिहासिक व्यापार समझौता था।

- स्थापना व सदस्य: यह 1 जनवरी 1994 को लागू हुआ था। इसके तीन सदस्य देश थे— संयुक्त राज्य अमेरिका (**USA**), कनाडा (**Canada**) और मेक्सिको (**Mexico**)।
- मुख्य उद्देश्य: 15 वर्षों की अवधि में तीनों देशों के बीच कृषि व औद्योगिक वस्तुओं के व्यापार पर लगे सभी प्रशुल्क (Tariffs) और व्यापारिक प्रतिबंधों को पूरी तरह समाप्त करना।
- वर्तमान स्थिति: 2020 में नाफ्टा को संशोधित करके एक नए समझौते द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया है जिसे **USMCA (United States-Mexico-Canada Agreement)** कहा जाता है।

प्रश्न 31: क्षेत्रवाद (Regionalism) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र में क्षेत्रवाद (Regionalism) का आशय एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के दो या दो से अधिक देशों द्वारा आपस में व्यापारिक और आर्थिक सहयोग बढ़ाने की प्रक्रिया से है।

- कार्यप्रणाली: इसके अंतर्गत पड़ोसी देश मिलकर क्षेत्रीय व्यापारिक समझौते (Regional Trade Agreements - RTAs) करते हैं और अपने समूह के भीतर प्रशुल्क और कोटा जैसी बाधाओं को समाप्त कर लेते हैं।
- विभिन्न रूप: क्षेत्रवाद के कई स्तर होते हैं—मुक्त व्यापार क्षेत्र (FTA), सीमा शुल्क संघ (Customs Union), साझा बाजार (Common Market), और पूर्ण आर्थिक संघ (Economic Union)।

प्रश्न 32: गैट (GATT) के प्रमुख उद्देश्य क्या थे?

उत्तर: गैट (General Agreement on Tariffs and Trade - 1947) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय

व्यापार को सुगम बनाने के लिए बनाया गया एक बहुपक्षीय समझौता था। इसके मुख्य उद्देश्य निम्न थे:

1. प्रशुल्कों में कटौती: विश्व व्यापार में बाधा डालने वाले प्रशुल्कों (Tariffs) और अन्य प्रतिबंधों में भारी कमी करना।
2. भेदभाव का अंत: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में किसी भी देश के साथ होने वाले भेदभाव को समाप्त करना (Most Favored Nation - MFN सिद्धांत के माध्यम से)।
3. जीवन स्तर में वृद्धि: विश्व के सभी सदस्य राष्ट्रों में पूर्ण रोजगार को बढ़ावा देना और लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना।
4. संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग: विश्व के प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण और कुशल उपयोग सुनिश्चित करना।

प्रश्न 33: विश्व व्यापार संगठन (WTO) के प्रमुख उद्देश्य बताइए।

उत्तर: 1 जनवरी 1995 को गैट (GATT) के स्थान पर विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organization - WTO) की स्थापना की गई। इसके प्रमुख उद्देश्य हैं:

1. मुक्त व्यापार का संचालन: विश्व भर में वस्तुओं और सेवाओं के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बिना किसी रुकावट के सुचारू और मुक्त बनाना।
2. विवादों का समाधान: सदस्य देशों के बीच उत्पन्न होने वाले व्यापारिक मतभेदों और विवादों का पारदर्शी और नियम-आधारित निपटारा करना।
3. सतत विकास (Sustainable Development): पर्यावरण की रक्षा करते हुए और संसाधनों का अनुकूलतम प्रयोग करते हुए सतत विकास को बढ़ावा देना।
4. विकासशील देशों की भागीदारी: विकासशील और सबसे कम विकसित देशों को वैश्विक व्यापार वृद्धि में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने में मदद करना।

प्रश्न 34: भारत को विश्व व्यापार संगठन से होने वाले सम्भावित लाभ बताइए।

उत्तर: विश्व व्यापार संगठन (WTO) का संस्थापक सदस्य होने के नाते भारत को निम्नलिखित प्रमुख लाभ प्राप्त हुए हैं:

1. निर्यात बाजारों तक पहुंच: बहुपक्षीय नियमों के कारण भारतीय वस्तुओं को बिना किसी भेदभाव के 160 से अधिक देशों के बाजारों में प्रवेश की सुविधा मिली है।
2. सेवा क्षेत्र में भारी वृद्धि: WTO के GATS समझौते के कारण भारत के सूचना प्रौद्योगिकी (IT), सॉफ्टवेयर और बीपीओ (BPO) निर्यात में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।
3. विवाद निपटारा प्रणाली: छोटे और विकासशील देश के रूप में भारत WTO के विवाद निवारण मंच का उपयोग करके शक्तिशाली विकसित देशों की अनुचित व्यापार नीतियों के खिलाफ अपनी सुरक्षा कर सका है।
4. विदेशी निवेश: व्यापारिक नियमों में पारदर्शिता आने से भारत में रिकॉर्ड प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का आगमन हुआ है।

प्रश्न 35: बहुपक्षीय व्यापार (Multilateral Trading) से क्या आशय है?

उत्तर: बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली (Multilateral Trading System) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का वह स्वरूप है जिसमें

तीन या तीन से अधिक देश एक साथ मिलकर एक समान नियमों और शर्तों के तहत आपस में व्यापार करते हैं।

- मुख्य आधार: इसका मुख्य आधार 'सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त राष्ट्र' (Most Favored Nation - MFN) का सिद्धांत है, जिसका अर्थ है कि कोई भी देश व्यापारिक नियमों में अपने किसी एक साथी देश को विशेष छूट देकर दूसरे देश के साथ भेदभाव नहीं कर सकता।
- संचालक संस्था: विश्व व्यापार संगठन (WTO) वैश्विक स्तर पर बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली का मुख्य संचालक और संरक्षक है।

प्रश्न 36: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के क्लासिकल और आधुनिक सिद्धान्त में अंतर बताइए।

उत्तर:

- क्लासिकल सिद्धान्त (रिकार्डो/स्मिथ): केवल 'श्रम' को उत्पादन का एकमात्र साधन मानता है (Labor Theory of Value)। यह लागतों में अंतर का कारण नहीं बता पाता और आंशिक संतुलन (Partial Equilibrium) दृष्टिकोण पर आधारित है।
- आधुनिक सिद्धान्त (हेक्सचर-ओहलिन): श्रम और पूंजी दोनों साधनों को शामिल करता है। यह स्पष्ट करता है कि साधनों की सापेक्षिक प्रचुरता (Factor Endowment) ही लागतों में अंतर लाती है। यह सामान्य संतुलन (General Equilibrium) विश्लेषण पर आधारित है।

प्रश्न 37: व्यापार की शर्तें (Terms of Trade) क्या हैं?

उत्तर:

व्यापार की शर्तें (Terms of Trade - ToT) किसी देश के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में प्राप्त होने वाले लाभ की दर को मापती हैं।

- परिभाषा: व्यापार की शर्तें किसी देश के निर्यात मूल्यों (\$P_x\$) और उसके आयात मूल्यों (\$P_m\$) के सापेक्षिक अनुपात को दर्शाती हैं।
- सूत्र: $TO_T = \left(\frac{P_x}{P_m} \right) \times 100\%$
- व्याख्या: यदि किसी देश के निर्यात मूल्य उसके आयात मूल्यों की तुलना में तेजी से बढ़ते हैं (\$P_x > P_m\$), तो व्यापार की शर्तें उस देश के अनुकूल (Favorable) मानी जाती हैं, क्योंकि उसे उतने ही आयातों के बदले कम निर्यात करने पड़ते हैं।

प्रश्न 38: आय व्यापार की शर्तें (Income Terms of Trade) क्या हैं?

उत्तर:

जी.एस. डोरोन्स द्वारा प्रतिपादित आय व्यापार की शर्तें (Income Terms of Trade) निवल बारटर व्यापार शर्तों का एक बेहतर रूप हैं।

- अवधारणा: यह केवल निर्यात और आयात की कीमतों का ही ध्यान नहीं रखती, बल्कि देश द्वारा निर्यात की जाने वाली कुल भौतिक मात्रा (\$Q_x\$) को भी ध्यान में रखती है।
- सूत्र: $IT_i = \left(\frac{P_x}{P_m} \right) \times Q_x$

- महत्व: यह सूचकांक वास्तव में किसी देश की कुल आयात करने की क्षमता (**Capacity to Import**) को दर्शाता है कि वह अपने कुल निर्यातों से कितना आयात खरीद सकता है।

प्रश्न 39: मुक्त व्यापार (**Free Trade**) के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर:

मुक्त व्यापार (जब देशों के बीच बिना किसी प्रशुल्क या प्रतिबंध के माल का आवागमन होता है) के पक्ष में मुख्य तर्क निम्न हैं:

1. साधनों का कुशल आवंटन: दुनिया के संसाधन अपनी उच्चतम उत्पादकता वाली जगहों पर इस्तेमाल होते हैं।
2. उपभोक्ताओं को लाभ: उपभोक्ताओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर की विविधतापूर्ण और गुणवत्तापूर्ण वस्तुएं सबसे कम कीमतों पर मिलती हैं।
3. प्रतिस्पर्धा और नवाचार: विदेशी कंपनियों से प्रतिस्पर्धा के कारण घरेलू उद्योग अपनी लागत घटाने और नई तकनीक अपनाने के लिए बाध्य होते हैं।
4. व्यापार से अधिकतम लाभ: सभी देशों का कुल उत्पादन और विश्व का आर्थिक कल्याण अधिकतम होता है।

प्रश्न 40: संरक्षणवाद (**Protectionism**) के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर:

संरक्षणवाद (अपने देशी उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाने की नीति) के समर्थन में मुख्य तर्क निम्न हैं:

1. शिशु उद्योग तर्क (**Infant Industry Argument**): नए स्थापित घरेलू उद्योगों को तब तक सुरक्षा मिलनी चाहिए जब तक वे बड़े होकर मजबूत न हो जाएं।
2. रोजगार सुरक्षा: विदेशी सस्ते सामान की बाढ़ से अपने देश की फैक्ट्रियों को बंद होने से बचाना और स्थानीय रोजगार को बनाए रखना।
3. राष्ट्रीय सुरक्षा तर्क: रक्षा, खाद्य और ऊर्जा जैसे सामरिक क्षेत्रों में देश को विदेशों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।
4. राशिपातन (**Dumping**) से बचाव: विदेशी कंपनियों द्वारा अनुचित तरीके से बेचे जाने वाले सस्ते माल से देश के उद्योगों की रक्षा करना।

प्रश्न 41: कोटा (**Quota**) और प्रशुल्क (**Tariff**) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

- प्रशुल्क (**Tariff**): यह आयातित वस्तुओं पर लगाया गया एक मूल्य-आधारित कर (**Tax**) है। इससे वस्तु की कीमत बढ़ती है, लेकिन आयात की कुल मात्रा पर कोई सीधी कानूनी रोक नहीं होती। इससे सरकार को सीधे राजस्व (**Revenue**) मिलता है।
- कोटा (**Quota**): यह किसी वस्तु की आयात की जाने वाली अधिकतम भौतिक मात्रा (**Quantity**) की एक निश्चित कानूनी सीमा तय कर देता है। मात्रा पूरी होने के बाद आयात बंद हो जाता है। इससे सरकार को

सीधे कोई कर राजस्व नहीं मिलता (जब तक कि कोटा लाइसेंस बेचे न जाएं)।

प्रश्न 42: अवमूल्यन (Devaluation) क्या है और इसका BoP पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर:

- अर्थ: जब किसी देश की सरकार या केंद्रीय बैंक आधिकारिक रूप से अपनी देशी मुद्रा के मूल्य को किसी विदेशी मुद्रा (जैसे डॉलर) की तुलना में जानबूझकर कम कर देता है, तो उसे अवमूल्यन कहते हैं।
- BoP पर प्रभाव:
 1. अवमूल्यन से विदेशी खरीदारों के लिए हमारे निर्यात सस्ते हो जाते हैं, जिससे निर्यातों की मांग बढ़ती है।
 2. हमारे देशवासियों के लिए आयात महंगे हो जाते हैं, जिससे आयातों में कमी आती है।
 3. निष्कर्ष: यदि निर्यात बढ़ते हैं और आयात घटते हैं, तो देश के भुगतान संतुलन (BoP) का घाटा दूर होने लगता है और उसमें सुधार आता है।

प्रश्न 43: मार्शल-लर्नर शर्त (Marshall-Lerner Condition) क्या है?

उत्तर:

मार्शल-लर्नर शर्त यह स्पष्ट करती है कि मुद्रा का अवमूल्यन (Devaluation) किस स्थिति में भुगतान संतुलन (BoP) के घाटे को सुधारने में सफल होगा।

- शर्त: अवमूल्यन तभी सफल होगा जब देश के निर्यात की मांग की लोच (e_x) और उसके आयात की मांग की लोच (e_m) का कुल योग 1 से अधिक हो।
- गणितीय रूप: $e_x + e_m > 1$
- व्याख्या: यदि दोनों की लोच का योग 1 से कम रहता है ($e_x + e_m < 1$), तो अवमूल्यन से भुगतान संतुलन सुधारने के बजाय और अधिक बिगड़ जाएगा।

प्रश्न 44: जे-वक्र प्रभाव (J-Curve Effect) क्या है?

उत्तर:

जे-वक्र प्रभाव अवमूल्यन (Devaluation) के बाद समय के साथ भुगतान संतुलन में होने वाले परिवर्तनों के पैटर्न को दर्शाता है।

- प्रक्रिया: अवमूल्यन के तुरंत बाद (अल्पकाल में), व्यापार सौदे और अनुबंध पहले से तय होने के कारण आयात महंगे हो जाते हैं, जिससे भुगतान संतुलन का घाटा सुधारने के बजाय पहले और अधिक बढ़ जाता है।
- सुधार: लेकिन कुछ समय बीतने पर (दीर्घकाल में), जब लोग महंगे आयातों को घटाते हैं और सस्ते निर्यातों का उत्पादन बढ़ता है, तो BoP में तेजी से सुधार होने लगता है।
- आकार: यदि इस प्रक्रिया का ग्राफ बनाया जाए, तो वह अंग्रेजी के 'J' अक्षर जैसा दिखाई देता है।

प्रश्न 45: विदेशी व्यापार गुणक (Foreign Trade Multiplier) क्या है?

उत्तर:

विदेशी व्यापार गुणक (जिसे निर्यात गुणक भी कहते हैं) यह मापता है कि निर्यातों में होने वाली किसी स्वायत्त वृद्धि (Autonomous Increase in Exports) के परिणामस्वरूप किसी देश की कुल राष्ट्रीय आय में कितने गुना वृद्धि होती है।

- सूत्र: $K_f = \frac{\Delta Y}{\Delta X} = \frac{1}{MPS + MPM}$
(जहां MPS = बचत की सीमांत प्रवृत्ति, MPM = आयात की सीमांत प्रवृत्ति)
- व्याख्या: निर्यात में वृद्धि से देश में आय बढ़ती है, लेकिन इस आय वृद्धि का कुछ हिस्सा बचत (MPS) और आयातों (MPM) में रिसाव (Leakage) के रूप में बाहर चला जाता है।

प्रश्न 46: विशेष आहरण अधिकार (SDR) क्या हैं?

उत्तर:

विशेष आहरण अधिकार (Special Drawing Rights - SDR) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा 1969 में सृजित की गई एक अंतर्राष्ट्रीय रिज़र्व संपत्ति है।

- कागजी सोना (**Paper Gold**): इसे आम बोलचाल में 'कागजी सोना' भी कहा जाता है। यह कोई भौतिक मुद्रा (नोट या सिक्का) नहीं है, बल्कि एक खाता प्रविष्टि (Account Entry) है।
- मूल्य निर्धारण: SDR का मूल्य विश्व की 5 प्रमुख मुद्राओं के बास्केट (अमेरिकी डॉलर, यूरो, चीनी युआन, जापानी येन, और ब्रिटिश पाउंड) के आधार पर तय होता है।
- उपयोग: IMF के सदस्य देश अपने भुगतान संतुलन के घाटे को पूरा करने के लिए SDR का उपयोग आपस में विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के लिए करते हैं।

प्रश्न 47: अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के मुख्य कार्य क्या हैं?

उत्तर:

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (International Monetary Fund) की स्थापना 1944 के ब्रेटन वुड्स सम्मेलन के तहत हुई थी। इसके मुख्य कार्य निम्न हैं:

1. विनिमय दर स्थिरता: सदस्य देशों की विनिमय दरों में स्थिरता बनाए रखना और प्रतिस्पर्धात्मक अवमूल्यन को रोकना।
2. **BoP** घाटे के लिए अल्पकालीन ऋण: भुगतान संतुलन के अस्थायी घाटे से जूझ रहे सदस्य देशों को विदेशी मुद्रा ऋण प्रदान करना।
3. वित्तीय निगरानी (**Surveillance**): वैश्विक आर्थिक स्थिति और सदस्य देशों की आर्थिक व मौद्रिक नीतियों की निरंतर निगरानी करना।
4. तकनीकी सहायता: विकासशील देशों को बैंकिंग, कर प्रणाली और आंकड़ों के प्रबंधन में तकनीकी प्रशिक्षण और सलाह देना।

प्रश्न 48: विश्व बैंक (World Bank) का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर:

विश्व बैंक (पुनर्निर्माण और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय बैंक - IBRD) का प्राथमिक उद्देश्य विकासशील और विकसित हो रहे राष्ट्रों में दीर्घकालीन आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन को बढ़ावा देना है।

- मुख्य कार्य:
 1. बुनियादी ढांचे (जैसे- सड़कें, बिजली, बांध, स्कूल, अस्पताल) के निर्माण के लिए दीर्घकालिक और कम ब्याज दर पर ऋण देना।
 2. सदस्य देशों में निजी क्षेत्र के निवेश को बढ़ावा देना।
 3. गरीब देशों को विकास परियोजनाओं के लिए अनुदान (Grants) और बिना ब्याज के ऋण (IDA के माध्यम से) उपलब्ध कराना।

प्रश्न 49: FDI और FPI में क्या अंतर है?

उत्तर:

- **FDI (प्रत्यक्ष विदेशी निवेश):** इसमें विदेशी निवेशक किसी दूसरे देश में भौतिक संपत्तियों में निवेश करता है (जैसे नई कंपनी खोलना या फैक्ट्री लगाना)। यह दीर्घकालिक निवेश होता है और निवेशक को कंपनी के प्रबंधन व संचालन में प्रत्यक्ष नियंत्रण प्राप्त होता है।
- **FPI (विदेशी पोर्टफोलियो निवेश):** इसमें विदेशी निवेशक केवल दूसरे देश के शेयर बाजार में कंपनियों के शेयर, बॉन्ड या डिबेंचर खरीदता है। इसमें कंपनी के प्रबंधन पर कोई नियंत्रण नहीं होता और इसे अल्पकालिक 'हॉट मनी' (**Hot Money**) माना जाता है जो बाजार में उतार-चढ़ाव आते ही देश से बाहर चला जाता है।

प्रश्न 50: शिशु उद्योग तर्क (Infant Industry Argument) क्या है?

उत्तर:

यह तर्क सबसे पहले अलेक्जेंडर हैमिल्टन और फ्रेडरिक लिस्ट द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

- अवधारणा: इस तर्क के अनुसार, किसी विकासशील देश में नए स्थापित हुए उद्योग (Infant Industries) अपनी शुरुआती अवस्था में अकुशल और उच्च लागत वाले होते हैं। वे विकसित देशों की पुरानी और विशालकाय कंपनियों की सस्ती वस्तुओं से मुकाबला नहीं कर सकते।
- नीति: "जिस प्रकार बच्चे को बड़ा होने तक देखभाल की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार नए उद्योगों को भी शुरुआती दौर में प्रशुल्क और कोटा लगाकर विदेशी प्रतिस्पर्धा से संरक्षण दिया जाना चाहिए।"
- शर्त: जब ये उद्योग बड़े, कुशल और आत्मनिर्भर हो जाएं, तो उनसे यह संरक्षण धीरे-धीरे हटा लिया जाना चाहिए।

प्रश्न 51: प्रतिकारी शुल्क (Countervailing Duty) क्या है?

उत्तर:

प्रतिकारी शुल्क (CVD) एक विशिष्ट प्रकार का आयात शुल्क (Import Duty) है।

- स्थिति: जब किसी विदेशी देश की सरकार अपने घरेलू उत्पादकों को भारी सब्सिडी (Subsidies) देती है, जिससे वे उत्पादक अपनी वस्तु को बहुत कम कीमत पर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेचने लगते हैं।
- कार्रवाई: आयात करने वाला देश इस सब्सिडी के अनुचित प्रभाव को समाप्त करने और अपने घरेलू उत्पादकों को समान अवसर प्रदान करने के लिए उस आयातित वस्तु पर एक विशेष शुल्क लगाता है, जिसे प्रतिकारी शुल्क (Countervailing Duty) कहा जाता है।

प्रश्न 52: एंटी-डंपिंग ड्यूटी (Anti-Dumping Duty) क्या है?

उत्तर:

एंटी-डंपिंग ड्यूटी (ADD) अनुचित व्यापार प्रथाओं से अपने देश के उद्योगों को बचाने के लिए लगाया जाने वाला एक व्यापारिक संरक्षण शुल्क है।

- प्रक्रिया: जब कोई विदेशी देश अपने माल को अपने घरेलू बाजार के मूल्य से भी काफी सस्ते दाम पर किसी अन्य देश में डंप (Dump) करता है, तो आयात करने वाले देश की सरकार उस वस्तु पर अतिरिक्त सीमा शुल्क लगा देती है।
- उद्देश्य: इस शुल्क का उद्देश्य आयातित वस्तु की कीमत को बढ़ाकर उसके वास्तविक सामान्य बाजार मूल्य (Normal Value) के बराबर लाना होता है ताकि देशी उद्योग नष्ट न हों।

प्रश्न 53: ट्रिप्स (TRIPS) समझौता क्या है?

उत्तर:

TRIPS (Trade-Related Aspects of Intellectual Property Rights) विश्व व्यापार संगठन (WTO) का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक बहुपक्षीय समझौता है।

- विषय: यह समझौता बौद्धिक संपदा अधिकारों (Intellectual Property Rights) के अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक पहलुओं को नियंत्रित करता है।
- शामिल अधिकार: इसके अंतर्गत पेटेंट (Patents), कॉपीराइट (Copyrights), ट्रेडमार्क (Trademarks), औद्योगिक डिजाइन, और भौगोलिक संकेत (Geographical Indications - GI Tag) शामिल हैं।
- उद्देश्य: सभी सदस्य देशों में नवाचार और खोजों की सुरक्षा के लिए एक समान कठोर कानूनी मानक लागू करना।

प्रश्न 54: ट्रिम्स (TRIMS) समझौता क्या है?

उत्तर:

TRIMS (Trade-Related Investment Measures) भी WTO के अंतर्गत किया गया एक प्रमुख समझौता है।

- विषय: यह समझौता विदेशी निवेश से जुड़े व्यापारिक उपायों से संबंधित है।
- नियम: यह समझौता सदस्य देशों की सरकारों को विदेशी निवेशकों पर ऐसी शर्तें लगाने से रोकता है जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बाधा पैदा करती हों या भेदभावपूर्ण हों (जैसे- विदेशी कंपनियों पर स्थानीय सामग्री खरीदने या निर्यात की अनिवार्य शर्त लगाना)।
- उद्देश्य: विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) के प्रवाह को सुगम और निर्बाध बनाना।

प्रश्न 55: सीमा शुल्क संघ (Customs Union) और मुक्त व्यापार क्षेत्र (FTA) में क्या अंतर है?

उत्तर:

- मुक्त व्यापार क्षेत्र (**Free Trade Area - FTA**): इसके अंतर्गत सदस्य देश आपस में व्यापार की जाने वाली वस्तुओं पर से प्रशुल्क (Tariffs) हटा लेते हैं, लेकिन गैर-सदस्य (बाहरी) देशों के साथ व्यापार के लिए प्रत्येक सदस्य देश अपनी अलग-अलग नीतियां और प्रशुल्क दरें बनाए रखने के लिए स्वतंत्र होता है।
- सीमा शुल्क संघ (**Customs Union**): इसमें सदस्य देश आपस में तो प्रशुल्क समाप्त करते ही हैं, साथ ही समूह से बाहर के सभी गैर-सदस्य देशों के लिए एक समान बाहरी प्रशुल्क नीति (**Common External Tariff**) अपनाते हैं।

प्रश्न 56: साझा बाजार (Common Market) क्या होता है?

उत्तर: साझा बाजार (Common Market) आर्थिक एकीकरण (Economic Integration) का एक उन्नत चरण है।

- विशेषताएं:
 1. इसमें सीमा शुल्क संघ की सभी विशेषताएं शामिल होती हैं (आंतरिक प्रशुल्क समाप्ति और समान बाहरी प्रशुल्क)।
 2. इसके अतिरिक्त, सदस्य देशों के बीच उत्पादन के साधनों (श्रम और पूंजी) का भी पूर्णतः मुक्त आवागमन (**Free Movement**) होता है।
- परिणाम: एक सदस्य देश का नागरिक या व्यवसायी किसी भी दूसरे सदस्य देश में जाकर बिना किसी वीजा या कानूनी रुकावट के काम कर सकता है या व्यवसाय स्थापित कर सकता है।

प्रश्न 57: आर्थिक संघ (Economic Union) क्या है?

उत्तर: आर्थिक संघ (Economic Union) क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण का उच्चतम और सबसे गहन रूप है।

- संरचना: यह साझा बाजार के स्तर से भी आगे बढ़कर काम करता है। इसमें शामिल सभी सदस्य देश अपनी राजकोषीय नीतियां (**Fiscal Policies**), मौद्रिक नीतियां (**Monetary Policies**), और सामाजिक नीतियां को आपस में एकीकृत और समरूप बना लेते हैं।
- उदाहरण: यूरोपीय संघ (**European Union - EU**) इसका सबसे उत्तम उदाहरण है, जहां सदस्य देशों की एक साझा केंद्रीय बैंक (ECB) और एक साझा मुद्रा (Euro) है।

प्रश्न 58: व्यापार सृजन (Trade Creation) क्या है?

उत्तर:

जाकोब वाइनर (Jacob Viner) द्वारा प्रतिपादित 'व्यापार सृजन' सीमा शुल्क संघ बनने का एक सकारात्मक (कल्याणकारी) प्रभाव है।

- प्रक्रिया: जब कोई सीमा शुल्क संघ बनता है, तो किसी सदस्य देश में अत्यधिक लागत वाले महंगे घरेलू उत्पादन का स्थान किसी दूसरे सदस्य देश से आने वाला कम लागत वाला (सस्ता) आयात ले लेता है।
- प्रभाव: इससे संसाधनों का कुशल उपयोग होता है, वस्तुओं के दाम गिरते हैं, उपभोग बढ़ता है और समाज का कुल आर्थिक कल्याण (Welfare) बढ़ता है।

प्रश्न 59: व्यापार विपथन (Trade Diversion) क्या है?

उत्तर:

जाकोब वाइनर के अनुसार 'व्यापार विपथन' सीमा शुल्क संघ बनने का एक नकारात्मक प्रभाव है।

- प्रक्रिया: सीमा शुल्क संघ बनने से पहले कोई देश संघ के बाहर मौजूद किसी अति-सस्ते देश से माल आयात कर रहा था। लेकिन संघ बनने के बाद, बाहरी देश पर समान प्रशुल्क लग जाने के कारण, आयात बाहर के सस्ते देश से स्थानांतरित होकर संघ के भीतर मौजूद किसी अपेक्षाकृत महंगे सदस्य देश की ओर मुड़ जाता है।
- प्रभाव: इसके कारण संसाधनों का गलत आवंटन होता है और कुल विश्व कल्याण में कमी आती है।

प्रश्न 60: स्वायत्त (Autonomous) और समायोजक (Accommodating) मदों में अंतर बताइए।

उत्तर:

भुगतान संतुलन (BoP) के खातों में लेन-देन की मदों को दो श्रेणियों में बांटा जाता है:

- स्वायत्त मदें (Autonomous Items): ये वे लेन-देन हैं जो केवल अपने स्वतंत्र आर्थिक कारणों (जैसे लाभ कमाना) से किए जाते हैं, BoP के लाभ या घाटे से इनका कोई लेना-देना नहीं होता। इन्हें 'रेखा के ऊपर की मदें' (Above the Line Items) कहा जाता है।
- समायोजक मदें (Accommodating Items): ये वे लेन-देन हैं जो स्वायत्त मदों के कारण उत्पन्न हुए BoP के घाटे या आधिक्य को संतुलित (बराबर) करने के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा किए जाते हैं। इन्हें 'रेखा के नीचे की मदें' (Below the Line Items) कहा जाता है।

प्रश्न 61: लोचदार विनिमय दर (Floating Exchange Rate) क्या है?

उत्तर:

लोचदार या परिवर्तनशील विनिमय दर प्रणाली वह व्यवस्था है जिसमें विदेशी मुद्रा का मूल्य स्वतंत्र रूप से तय होता है।

- निर्धारण: इसमें विनिमय दर का निर्धारण अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार में मुद्रा की मांग (**Demand**) और पूर्ति (**Supply**) की स्वतंत्र शक्तियों द्वारा होता है।
- सरकारी हस्तक्षेप: इसमें सरकार या देश का केंद्रीय बैंक विनिमय दर को नियंत्रित करने के लिए बाजार में कोई सीधा हस्तक्षेप नहीं करता। बाजार के रुख के अनुसार दरें प्रतिदिन या प्रति पल बदलती रहती हैं।

प्रश्न 62: स्थिर विनिमय दर (**Fixed Exchange Rate**) क्या है?

उत्तर:

स्थिर विनिमय दर प्रणाली वह व्यवस्था है जिसमें किसी देश की मुद्रा का मूल्य किसी बाहरी मानक के संदर्भ में तय किया जाता है।

- निर्धारण: इसमें देश की सरकार या केंद्रीय बैंक आधिकारिक तौर पर अपनी मुद्रा की विनिमय दर को किसी अन्य मजबूत विदेशी मुद्रा (जैसे अमेरिकी डॉलर) या सोने (Gold) के साथ एक निश्चित स्तर पर बांध (Peg) देता है।
- रखरखाव: इस दर को स्थिर बनाए रखने के लिए केंद्रीय बैंक को अपने विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग करके बाजार में लगातार क्रय-विक्रय करना पड़ता है।

प्रश्न 63: प्रबंधित लोचदार विनिमय दर (**Managed Floating System**) क्या है?

उत्तर:

प्रबंधित लोचदार विनिमय दर (जिसे 'डर्टी फ्लोटिंग' - Dirty Floating भी कहा जाता है) स्थिर और लोचदार विनिमय दर प्रणालियों का एक मिश्रित रूप है।

- कार्यप्रणाली: सामान्य परिस्थितियों में विनिमय दर का निर्धारण बाजार में मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा ही होता है।
- केंद्रीय बैंक की भूमिका: लेकिन जब विनिमय दर में अत्यधिक उतार-चढ़ाव आने लगता है जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक हो, तो केंद्रीय बैंक अपनी मुद्रा की विनिमय दर को नियंत्रित और स्थिर करने के लिए बाजार में हस्तक्षेप (डॉलर की खरीद या बिक्री) करता है।

प्रश्न 64: क्रय शक्ति समता सिद्धान्त (**Purchasing Power Parity Theory**) क्या है?

उत्तर:

क्रय शक्ति समता (PPP) सिद्धान्त का प्रतिपादन स्वीडिश अर्थशास्त्री गुस्ताव कैसल (Gustav Cassel) ने किया था।

- मुख्य विचार: स्वतंत्र विनिमय दर प्रणाली में दो कागजी मुद्राओं के बीच विनिमय दर अंततः दोनों देशों में उन मुद्राओं की सापेक्षिक क्रय शक्ति (**Purchasing Power**) के अनुपात से निर्धारित होती है।
- सिद्धान्त: विनिमय दर वह दर होगी जो दोनों देशों में समान वस्तुओं और सेवाओं के एक निश्चित बास्केट को खरीदने की क्षमता रखती हो। (जैसे- यदि जो सामान अमेरिका में \$1 में मिलता है, वही सामान भारत

में ₹80 में मिलता है, तो PPP के अनुसार विनिमय दर $\$1 = ₹80$ होनी चाहिए)।

प्रश्न 65: निरपेक्ष और सापेक्ष क्रय शक्ति समता सिद्धान्त में अंतर बताइए।

उत्तर:

- **निरपेक्ष PPP (Absolute PPP):** यह रूप मानता है कि विनिमय दर दो देशों के सामान्य कीमत स्तरों (Price Levels) का सीधा अनुपात होती है ($\$E = P_d / P_f$)। यह मानकर चलता है कि परिवहन लागत नहीं है और सभी वस्तुएं व्यापार योग्य हैं।
- **सापेक्ष PPP (Relative PPP):** यह अधिक व्यावहारिक रूप है। यह कीमत स्तरों के स्थान पर मुद्रास्फीति दर (Inflation Rates) के अंतर पर केंद्रित है। इसके अनुसार, विनिमय दर में होने वाला परिवर्तन दोनों देशों के बीच मुद्रास्फीति दरों में आए अंतर के समानुपाती होता है।

प्रश्न 66: प्रतिपारस्परिक मांग (Reciprocal Demand) का सिद्धान्त क्या है?

उत्तर:

प्रतिपारस्परिक मांग का सिद्धान्त जे.एस. मिल (John Stuart Mill) द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जो रिकार्डो के तुलनात्मक लागत सिद्धान्त का एक महत्वपूर्ण विस्तार है।

- अवधारणा: रिकार्डो ने यह तो बताया था कि व्यापार से लाभ होगा, लेकिन यह नहीं बताया कि व्यापार की वास्तविक दर (Terms of Trade) किस बिंदु पर तय होगी।
- मिल का उत्तर: जे.एस. मिल के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय विनिमय दर उन दोनों देशों की प्रतिपारस्परिक मांग (एक-दूसरे की वस्तुओं के लिए मांग की तीव्रता और लोच) द्वारा निर्धारित होती है। व्यापार की शर्तें उस बिंदु पर स्थिर होंगी जहां एक देश का कुल निर्यात दूसरे देश के कुल आयात के मूल्य के बराबर हो जाए।

प्रश्न 67: प्रस्ताव वक्र (Offer Curve) क्या व्यक्त करता है?

उत्तर:

प्रस्ताव वक्र (Offer Curve) की अवधारणा का विकास अल्फ्रेड मार्शल और फ्रांसिस एजवर्थ द्वारा किया गया था।

- परिभाषा: एक देश का प्रस्ताव वक्र यह दर्शाता है कि वह आयातित वस्तु की विभिन्न दी गई मात्राओं को प्राप्त करने के बदले अपनी निर्यातित वस्तु की कितनी मात्रा देने (प्रस्ताव करने) के लिए तैयार है।
- उपयोग: यह वक्र देश की मांग और पूर्ति की लोच को एक साथ जोड़ता है। जब दो देशों के प्रस्ताव वक्र एक-दूसरे को जिस बिंदु पर काटते हैं, वही अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का संतुलन बिंदु और व्यापार की शर्तें (Terms of Trade) निर्धारित होती हैं।

प्रश्न 68: अवसर लागत सिद्धान्त (Opportunity Cost Theory) क्या है?

उत्तर:

गॉटफ्राइड हैबरलर (Gottfried Haberler - 1936) ने रिकार्डो के अवास्तविक 'श्रम मूल्य सिद्धान्त' को खारिज

करते हुए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के अवसर लागत सिद्धान्त की स्थापना की।

- अवधारणा: किसी वस्तु X की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने की अवसर लागत, वस्तु Y की वह मात्रा है जिसका उत्पादन X का उत्पादन बढ़ाने के लिए छोड़ना या त्यागना पड़ता है ($\Delta Y / \Delta X$)।
- व्यापार का आधार: हैबरलर के अनुसार, यदि दो देशों में वस्तुओं के उत्पादन की अवसर लागत में भिन्नता पाई जाती है, तो उनके बीच व्यापार संभव और लाभदायक होगा। इसे उत्पादन संभावना वक्र (PPC) की मदद से समझाया जाता है।

प्रश्न 69: साप्ता (SAPTA) और साफ़्टा (SAFTA) में क्या अंतर है?

उत्तर:

- **SAPTA (SAARC Preferential Trading Arrangement - 1993):** यह सार्क देशों के बीच व्यापार को बढ़ावा देने का शुरुआती प्रयास था। इसमें केवल चुनिंदा (Selective) वस्तुओं पर ही सदस्य देशों को प्रशुल्क में थोड़ी छूट दी जाती थी।
- **SAFTA (South Asian Free Trade Area - 2006):** यह साप्ता का ही एक उन्नत और व्यापक रूप है। इसका लक्ष्य पूरे दक्षिण एशियाई क्षेत्र (SAARC) को एक पूर्ण मुक्त व्यापार क्षेत्र (Free Trade Area) बनाना था, जिसके तहत चरणबद्ध तरीके से सभी वस्तुओं पर से प्रशुल्क दरों को घटकर शून्य से 5% के स्तर पर लाया जाना तय किया गया।

प्रश्न 70: वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (Global Value Chains - GVCs) का क्या महत्व है?

उत्तर:

वैश्विक मूल्य श्रृंखला (GVC) आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की एक मुख्य विशेषता है।

- अर्थ: GVC का अर्थ है कि किसी एक अंतिम वस्तु के उत्पादन की विभिन्न प्रक्रियाओं (जैसे- अनुसंधान, डिजाइन, कच्चे माल की प्रोसेसिंग, घटकों का निर्माण, असेंबली, और मार्केटिंग) को दुनिया के अलग-अलग देशों में विभाजित कर देना।
- महत्व:
 1. इससे विकासशील देशों को पूरी वस्तु का निर्माण किए बिना भी केवल एक विशिष्ट घटक (Component) के उत्पादन में विशिष्टीकरण करके वैश्विक व्यापार से जुड़ने का मौका मिलता है।
 2. इससे वैश्विक स्तर पर उत्पादकता बढ़ती है, लागत में भारी कमी आती है और रोजगार तथा प्रौद्योगिकी का तेजी से हस्तांतरण होता है।